

सिंधी भगत: ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्रदर्शनकारी आयामों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. तमन्ना जे. लालवानी

सहायक प्राध्यापक

सिंधी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा.

Abstract: यह शोध पत्र सिंधी लोक कला 'भगत' के उद्भव, विकास, संरचना और बहुआयामी सांस्कृतिक महत्व का गहन अन्वेषण करता है। यद्यपि 'भगत' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'भक्ति' शब्द से हुई है, तथापि यह परंपरा केवल धार्मिक उपासना तक सीमित न रहकर एक स्वायत्त और जीवंत लोक कला के रूप में विकसित हुई है। यह अध्ययन सिंधु घाटी सभ्यता के पुरातात्विक साक्ष्यों से प्रारंभ होकर मध्यकालीन सूफी प्रभावों, राजनीतिक दमन और ब्रिटिश काल के पुनरुत्थान तक के ऐतिहासिक क्रम को रेखांकित करता है। संगीत के राग विधान, नृत्य की मुद्राओं, लोक कथाओं की आख्यान शैली और नाट्य तत्वों के समन्वय का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही, इष्टदेव झुलेलाल की केंद्रीय आध्यात्मिक भूमिका, मंडली की संरचना, मंच विधान और सिंधी सामाजिक जीवन में भगत की अपरिहार्य उपस्थिति को भी विवेचित किया गया है। यह पत्र इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि भगत केवल एक मनोरंजक कला नहीं, बल्कि सिंधी सभ्यता की स्मृति, पहचान और सामुदायिक एकता का एक सशक्त सांस्कृतिक वाहन है।

Index Terms: भगत, झुलेलाल, मुहरेदार, सिंधी संगीत, राग, स्वांग, मसखरा, सिंधी लोक कला, प्रदर्शनकारी कलाएँ।

विषय क्षेत्र	सिंधी लोक कला, प्रदर्शनकारी कलाएँ, सांस्कृतिक इतिहास
मुख्य शब्द	भगत, झुलेलाल, मुहरेदार, सिंधी संगीत, राग, स्वांग, मसखरा
शोध पद्धति	ऐतिहासिक विश्लेषण, सांस्कृतिक नृवंशविज्ञान, साहित्यिक अन्वेषण
संदर्भ काल	सिंधु घाटी सभ्यता से समकालीन प्रवासी सिंधी समुदाय तक

I. परिचय

भारतीय उपमहाद्वीप की समृद्ध लोक कला परंपराओं में सिंधी 'भगत' का स्थान अत्यंत विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। यह मध्यकालीन भारतीय साहित्य और प्रदर्शनकारी कलाओं (Performing Arts) की एक ऐसी अनूठी विधा है जो संगीत, राग-वाद्य, लोक नाटक, लोक गीत और लोक कथाओं को एक सूत्र में पिरोती है। भगत को सिंधी संस्कृति की 'जीवित पाठशाला' कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि इसके माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी नैतिक मूल्य, ऐतिहासिक स्मृतियाँ और आध्यात्मिक चेतना अनवरत प्रवाहित होती रही है।

भगत एक ऐसी मौखिक परंपरा है जो लिखित ग्रंथों पर नहीं, बल्कि जीवंत प्रदर्शन पर टिकी है। इसमें लोक गाथा गीतों — जिन्हें सिंधी में 'बैलड़' कहा जाता है — की प्रस्तुति एक विशेष मौलिक, स्फूर्तिदायक और रंगमयी अंदाज़ में की जाती है। 'न्यू डिक्शनरी' के अनुसार, बैलड़ वह रोचक काव्य रचना है जिसमें गीत के माध्यम से कहानी व्यक्त की जाती है। भगत में कथा के मंचन के दौरान आंगिक (शारीरिक अभिव्यक्ति), वाचिक (संवाद एवं गायन) और सात्विक (भावनात्मक) अभिनय के त्रिवेणी संगम से एक ऐसा जीवंत वातावरण निर्मित होता है जो दर्शक को कथा में डुबो देता है।

भगत की प्रासंगिकता केवल सिंध की भौगोलिक सीमाओं तक नहीं रही। 1947 के विभाजन के पश्चात्, जब लाखों सिंधी हिंदू अपनी जन्मभूमि को छोड़कर भारत और विश्व के विभिन्न देशों में बस गए, तब भगत ने एक सांस्कृतिक रस्सी का काम किया जिसने इस बिखरे हुए समुदाय को उनकी साझी विरासत से जोड़े रखा।

II. 'भगत' शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ-विस्तार

किसी भी लोक परंपरा को समझने की पहली कुंजी उसके नाम की व्युत्पत्ति में निहित होती है। 'भगत' शब्द का भाषाशास्त्रीय अन्वेषण हमें सीधे संस्कृत की उस समृद्ध दार्शनिक परंपरा तक ले जाता है जिसने भारतीय आत्मा को युगों से आलोकित किया है।

A. भाषाशास्त्रीय विश्लेषण

संस्कृत की धातु 'भज' का अर्थ है — सेवा करना, भजन करना, ईश्वर का ध्यान धरना। इसी मूल से 'भक्ति' शब्द की उत्पत्ति हुई, जिसका शाब्दिक अर्थ है ईश्वर के प्रति अनुराग, समर्पण और श्रद्धा। कालांतर में सिंधी बोलचाल में 'भक्ति' का सरलीकरण होकर 'भगत' रूप प्रचलित हो गया।

श्री परमानन्द मेवारा के प्रामाणिक 'सिंधी-अंग्रेजी कोश' में 'भगत' के दो समानांतर अर्थ-धाराएँ मिलती हैं:

- धार्मिक-आध्यात्मिक संदर्भ: वह व्यक्ति जो ईश्वर की उपासना में निरत हो, देवालय का पुजारी, समर्पित भक्त अथवा सेवक।
- कलात्मक-सामाजिक संदर्भ: वह कलाकार जो गायन, नृत्य और स्वांग (तमाशा) के माध्यम से धार्मिक आख्यान, नैतिक शिक्षाएँ और लोक कथाएँ समाज तक पहुँचाता है।

यह द्विआयामिता ही भगत को अन्य भक्ति परंपराओं से विशिष्ट बनाती है। भगत न केवल आध्यात्मिक साधना का माध्यम है, बल्कि एक सामाजिक संस्था भी है जो समाज को मनोरंजन के लिफाफे में ज्ञान प्रदान करती है।

B. अन्य परंपराओं से तुलना

भगत की परंपरा उत्तर भारत के 'भगत' (राजस्थान, उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोक रंगमंच), महाराष्ट्र के 'तमाशा', केरल के 'कथकली' और बंगाल के 'जात्रा' से कई बिंदुओं पर साम्य रखती है। परंतु सिंधी भगत की विशिष्टता इसके सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़े पुरातात्विक साक्ष्यों, सूफी काव्य के गहरे प्रभाव और झूलेलाल-केंद्रित आध्यात्मिकता में निहित है।

III. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विकास-यात्रा

सिंधी भगत का इतिहास सीधी रेखा में नहीं चला — यह एक ऐसी नदी है जो कभी उफनती रही, कभी भूमिगत हो गई, और कभी नए रूप में प्रकट हुई।

A. सिंधु घाटी सभ्यता: आदि साक्ष्य

विद्वान लीलाराम रुचंदाणी ने अपने शोध में इस महत्त्वपूर्ण तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि मोहन-जो-दड़ो की खुदाई में मिली ताम्र-पाषाण युगीन मुद्राओं और मूर्तियों पर जो आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं, वे भगत की वेशभूषा और नृत्य मुद्राओं से आश्चर्यजनक साम्य रखती हैं। इन मुद्राओं में वृक्ष देवता के समक्ष नृत्यरत आकृतियाँ, विशिष्ट श्रृंगार और पोशाक भगत की प्राचीनता का प्रबल प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

लोगाश के पुरातात्विक स्थल से प्राप्त मूर्तियाँ भी ध्यान-मुद्रा में बैठे व्यक्तियों को दर्शाती हैं जिनकी वेशभूषा भगत कलाकारों से मेल खाती है।

B. वैदिक एवं पौराणिक काल

वैदिक साहित्य में देव-स्तुति के लिए गायन-वाद्य का उल्लेख मिलता है। सामवेद, जो मूलतः गायन के लिए है, की परंपरा सिंधी भगत के संगीत विधान में अनुस्यूत प्रतीत होती है। पुराणों में वर्णित गंधर्व-अप्सराओं के नृत्य-गायन की परंपरा और सिंधु क्षेत्र की स्थानीय देव-आराधना पद्धतियों के संयोजन से भगत का प्रारंभिक स्वरूप निर्मित हुआ होगा।

C. सूफी प्रभाव और मध्यकालीन विकास

इस्लाम के सिंध में आगमन (711 ई.) के पश्चात् एक अत्यंत रोचक सांस्कृतिक संलाप आरंभ हुआ। सूफी संतों ने जब सिंध की धरती पर 'समाउ' (आध्यात्मिक संगीत-नृत्य) की परंपरा को विस्तार दिया, तो हिंदू और मुस्लिम दोनों धाराएँ एक-दूसरे से प्रभावित हुईं। सूफियों की 'काफी' काव्य परंपरा भगत की गायकी में गहरे उतर गई। 'सोनोख्यान' जैसे कलाकारों ने सूफी काफियों के साथ पात्रों के 'स्वांग' को जोड़कर भगत को नाट्यात्मक आयाम प्रदान किया।

D. गुलाबदास पंथ: भगत का संस्थागत स्वरूप

18वीं शताब्दी में महाराज गुलाबदास (जन्म 1723 ई.) ने सिंध भर में भ्रमण करते हुए भक्ति गायन की एक सुसंगठित शैली को लोकप्रिय बनाया। मंडलियों का गठन, भूमिकाओं का निर्धारण, संगीत का प्रशिक्षण और आयोजन की परंपराएँ इसी काल में सुदृढ़ हुईं।

E. राजनीतिक दमन और प्रतिरोध

मुस्लिम शासनकाल में, विशेषकर मियाँ गुलाम शाह कलहोड़े के शासन के दौरान, भगत प्रदर्शन पर कड़े प्रतिबंध आरोपित किए गए। यह कला मंदिरों और गुरुद्वारों की चारदीवारी में सिमट गई — यह एक प्रकार का सांस्कृतिक प्रतिरोध था।

F. ब्रिटिश काल: खुले मैदान में वापसी

ब्रिटिश प्रशासन के अंतर्गत भगत एक बार फिर खुले मैदानों पर प्रस्तुत होने लगी। इस नए रूप को 'मैदानी भगत' कहा जाने लगा, जो पिछले स्वरूप से अधिक उदार, विस्तृत और जन-सुलभ था।

IV. प्रदर्शन शैली और शिल्प विधान

भगत की महानता उसके शिल्प विधान में है — वह कौशल जिससे वह एक साथ कई कला-धाराओं को समायोजित करती है और फिर भी एक अखंड, प्रवाहमान अनुभव प्रदान करती है।

A. भगत मंडली की संरचना

भगत मंडली में प्रायः छह से सात कलाकार होते हैं, जिनमें से प्रत्येक की एक सुनिश्चित भूमिका होती है:

भूमिका (Role)	सिंधी नाम	कार्य एवं विशेषता
मुख्य भगत	मुहरेदार	मंडली का नायक और सूत्रधार। कथा का नेतृत्व, प्रमुख गायन और आलाप। हाथ में करताल या इकतारा।
सहायक गायक	बोलड़ियो / पीछेदार	मुख्य भगत के सुर में सुर मिलाते हैं। अंतरे को दोहराते समय केंद्र में आकर नृत्य करते हैं।
नर्तक	नाचू	सुंदर नवयुवक जो स्त्री वेश में नाज-नखरों और नृत्य में निपुण होते हैं। स्त्री पात्रों की भूमिका निभाते हैं।
हास्य कलाकार	मसखरा / जोकर	हाजिर-जवाबी और हास्य से गंभीर कथा में राहत देते हैं। मंच और दर्शकों के बीच स्वतंत्र रूप से विचरण।
वाद्य वादक	साजिंदे	ढोलक, तबला, हारमोनियम वादक। मुख्य भगत के पीछे बैठकर संगीत संरचना को आधार देते हैं।

तालिका 1: भगत मंडली की भूमिकाएँ

B. मंच संरचना और स्थानिक विधान

भगत का प्रदर्शन खुले मैदान में दर्शकों के बीच होता है। इस स्थान को 'पिढ़' कहा जाता है। यह व्यवस्था दर्शक और कलाकार के बीच की दूरी को समाप्त करती है।

- केन्द्र: मुख्य भगत (मुहरेदार) — पूरी प्रस्तुति का केंद्र-बिंदु। हाथ में करताल या इकतारा।
- पृष्ठभाग: साजिंदे (वाद्य वादक) — ढोलक, तबला और हारमोनियम की स्वर-लहरी।
- पार्श्व भाग: बोलड़ियो और नाचू — अंतरे के दोहराव के समय केंद्र में नृत्य।
- गतिशील क्षेत्र: मसखरा — पूरे मंच और दर्शकों के बीच स्वतंत्र विचरण।

C. संगीत और राग विधान

भगत का संगीत सिंधी लोक परंपरा और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का अद्भुत मिश्रण है। बुलंद आवाज़ और विशेष 'आलाप' शैली इसकी पहचान है।

प्रदर्शन का समय चक्र

- प्रारंभ (संध्या): 'अरदास' और 'मंगलाचरण' से शुभारंभ। इष्टदेव का आह्वान।
- प्रथम प्रहर (रात्रि 9-12 बजे): 'राग कल्याण' का प्रयोग।
- द्वितीय प्रहर (मध्य रात्रि के पश्चात्): 'कंसीयो राग' अथवा 'भगताणों राग'।
- समापन (प्रातःकाल): आरती, भजन और विसर्जन।

राग (Raag)	प्रयोग का समय	भावनात्मक स्वर
राग कल्याण	रात्रि 9-12 बजे	शांत, भक्तिपूर्ण; प्रारंभिक वातावरण निर्माण
कंसीयो / भगताणों राग	मध्य रात्रि के बाद	गहन अध्यात्म; रहस्यवाद का उत्कर्ष
मालकोंस	विशेष भावनात्मक प्रसंग	करुणा, वैराग्य और आत्म-चिंतन
हुसैनी	भक्ति प्रसंग	कोमल भक्ति भाव, विरह
जोग बिलावल	प्रातःकालीन प्रसंग	प्रसन्नता, उत्साह
कोहियारी	स्थानीय लोक प्रसंग	ग्रामीण जीवन, लोक भाव
लोडाउ / कांगड़ो	विविध प्रसंग	वीर रस, ओज

तालिका 2: प्रमुख राग और उनका भावनात्मक स्वर

D. ताल और वाद्य विधान

सिंधी भगत का ताल-विधान हिंदुस्तानी ताल-प्रणाली से भिन्न अपनी एक स्वतंत्र पहचान रखता है। प्रमुख सिंधी ताल: शादमानों (8 मात्रा, उत्सव), झिमिर (ढोलक-आधारित, नृत्य संगत), पल्लउ (धीमा, भक्ति के गहन क्षण)। प्रमुख वाद्य: ढोलक, तबला, हारमोनियम, करताल, सारंगी।

E. नृत्य, स्वांग और गद्य-पद्य का समन्वय

भगत में नृत्य कथा-कथन का महत्त्वपूर्ण उपकरण है। पैरों की थिरकन, हाथों की भाव-भंगिमाएँ और नेत्रों की अभिव्यक्ति मिलकर एक दृश्य-काव्य रचती हैं। 'स्वांग' में ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रों का वेश धारण कर जीवंत अभिनय किया जाता है, जिसमें सुधार (improvisation) की पर्याप्त गुंजाइश होती है। भगत की प्रस्तुति गद्य और पद्य का सुंदर समन्वय है — कथा का विस्तार गद्य में, भावनात्मक उत्कर्ष पद्य में।

V. भगत की चार स्तंभ परंपरा

शास्त्रीय कला-शास्त्र में किसी प्रदर्शनकारी कला को 'पूर्ण' तभी माना जाता है जब वह संगीत, वाद्य, नृत्य और अभिनय — इन चारों आयामों को समेटे। भगत इस कसौटी पर खरी उतरती है:

स्तंभ (Pillar)	विस्तृत विवरण
गायन (Gayan)	राग कल्याण, मालकोंस, पल्लउ का शास्त्रीय एवं लोक मिश्रण। बुलंद आवाज़ में आलाप। 'मेड-मुरक' — स्वर को मोड़कर विशेष भावनात्मक रंग उत्पन्न करने की अनूठी सिंधी गायकी।
वादन (Vadan)	शादमानों और झिमिर जैसे शुद्ध सिंधी ताल का प्रयोग। ढोलक की थाप पर आधारित लय-संरचना। करताल की झंकार से विशिष्ट ध्वनि-बनावट।
नृत्य (Nriya)	पैरों की ताल-बद्ध थिरकन, हस्त-मुद्राएँ और नेत्राभिनय का समन्वय। नाचू द्वारा स्त्री-वेश नृत्य और मुख्य भगत के नेतृत्व में समूह नृत्य।
स्वांग (Acting)	ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रों का वेश धारण कर जीवंत अभिनय। मसखरा का हास्य-अभिनय जो गंभीर क्षणों में भावनात्मक राहत देता है।

तालिका 3: भगत के चार स्तंभ

VI. सांस्कृतिक महत्व: इष्टदेव झूलेलाल और सिंधी पहचान

A. झूलेलाल: जल और विश्वास के देवता

सिंधी समुदाय का इतिहास समुद्री व्यापार से अभिन्न रूप से जुड़ा है। झूलेलाल को वरुण देव का अवतार माना जाता है। उनकी कथा के अनुसार, 10वीं शताब्दी में सिंध के शासक मिर्खशाह ने हिंदुओं पर इस्लाम स्वीकार करने का दबाव डाला। तब सिंधी हिंदुओं ने 40 दिन तक उपवास और प्रार्थना की, जिसके फल-स्वरूप सिंधु नदी से उदेरोलाल (झूलेलाल) प्रकट हुए और उन्होंने अपने भक्तों की रक्षा की।

B. भगत में झूलेलाल की अनिवार्य उपस्थिति

प्रत्येक सिंधी भगत में इष्टदेव झूलेलाल की स्तुति अनिवार्य और अटल है। भगत का प्रारंभ उनके आह्वान से होता है और समापन उनकी आरती से।

"झूले झूले झूलेलाल, जिंदा पीर उदेरोलाल" — इन पंक्तियों के उच्चारण मात्र से पूरा वातावरण भक्ति-रस में डूब जाता है।

C. मन्नत, बहिराणा साहिब और सामाजिक एकता

सिंधी समाज में मन्नत पूरी होने पर 'भगत' और 'बहिराणा साहिब' का आयोजन अनिवार्य कर्तव्य माना जाता है। ये आयोजन जाति, वर्ग और आर्थिक स्थिति की बाधाओं को पार कर सामाजिक एकता के केंद्र बनते हैं। भगत इस प्रकार सिंधी समाज का एक लोकतांत्रिक मंच बन जाती है।

D. विभाजन के बाद: प्रवासी सिंधी और भगत

1947 के विभाजन के पश्चात् भारत के विभिन्न नगरों — उलहासनगर, अजमेर, दिल्ली, मुंबई — तथा विश्व के अन्य देशों में बसे सिंधी समुदाय में आज भी भगत का नियमित आयोजन होता है। डिजिटल युग में यूट्यूब और फेसबुक पर भगत के वीडियो लाखों दर्शकों तक पहुँचते हैं।

VII. भगत का सौंदर्यशास्त्र: 'मेड-मुरक' और अन्य काव्य-गुण

A. मेड-मुरक: सिंधी गायकी की आत्मा

'मेड-मुरक' सिंधी संगीत की वह अनूठी तकनीक है जिसमें गायक स्वर को एक विशेष ढंग से मोड़ता है — मानो स्वर एक झूले पर बैठ गया हो। यह एक प्रकार की 'गमक' है जो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत से भिन्न एक सिंधी काव्य-ध्वनि उत्पन्न करती है।

B. प्रत्यक्ष कथन-शैली और हास्य-करुणा का सह-अस्तित्व

भगत की काव्य-भाषा सीधे और सरल शब्दों में अपनी बात कहती है, जिससे समाज का हर तबका इसकी भाषा समझ सके। मसखरा की भूमिका केवल हँसाना नहीं — वह गंभीर क्षणों में राहत देकर दर्शक को भावनात्मक सामंजस्य की ओर ले जाता है। यह द्वंद्व भारतीय रस-सिद्धांत का व्यावहारिक प्रयोग है।

VIII. समकालीन चुनौतियाँ और संरक्षण के प्रयास

A. प्रमुख चुनौतियाँ

- नई पीढ़ी की विमुखता: युवा सिंधी पीढ़ी का पश्चिमी और बॉलीवुड संगीत की ओर झुकाव।
- प्रशिक्षित कलाकारों का अभाव: पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा के कमजोर होने से कुशल भगत कलाकारों की कमी।
- आर्थिक व्यवहार्यता: पारंपरिक आयोजनों में आर्थिक सहयोग की घटती प्रवृत्ति।
- भाषाई कमजोरी: नई पीढ़ी में सिंधी भाषा का घटता प्रचलन।

B. संरक्षण के प्रयास

- सिंधी अकादमियाँ और सांस्कृतिक संस्थाएँ भगत कलाकारों को सम्मान और प्रोत्साहन दे रही हैं।
- डिजिटल आर्काइव: भगत प्रदर्शनों का वीडियो-ऑडियो अभिलेखन।
- शिक्षण संस्थानों में समावेश: सिंधी सांस्कृतिक पाठ्यक्रमों में भगत का अध्ययन।
- अंतर्राष्ट्रीय सिंधी महोत्सव: विश्व के विभिन्न देशों में सिंधी उत्सवों में भगत को प्रमुख स्थान।

IX. निष्कर्ष

इस शोध-यात्रा के अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सिंधी भगत केवल एक प्रदर्शनकारी कला नहीं है — यह सिंधी सभ्यता की जीवित स्मृति है। यह उस सभ्यता का दर्पण है जो सिंधु नदी के किनारे जन्मी, जो विविध संस्कृतियों के संगम से समृद्ध हुई, जो राजनीतिक दमन में भी जीवित रही, और जो विभाजन के बाद भी अपनी जड़ों से जुड़ी रही।

अपनी प्रत्यक्ष कथन-शैली, सरल वर्णनात्मक कविता, 'मेड-मुरक' की विशिष्ट गायकी और हास्य-करुणा के सुंदर समन्वय के कारण भगत आज भी विश्व के हर उस कोने में, जहाँ सिंधी समुदाय बसता है, एक सशक्त सांस्कृतिक वाहन के रूप में जीवित है।

"जब तक सिंधी भगत की धुन गूँजती रहेगी, सिंध की आत्मा जीवित रहेगी— चाहे वह सिंधु के किनारे गाई जाए या मुंबई की गली में, लंदन के हॉल में या न्यूयॉर्क के किसी मंदिर में।"

संदर्भ सूची (REFERENCES)

- [1] रुचंदाणी, लीलाराम. (2026). सिंधी भगत. [संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण]. सिंधी साहित्य अकादमी.
- [2] मेवारा, परमानन्द. सिंधी-अंग्रेज़ी कोश. [Sindhi-English Dictionary]. भारत सरकार प्रकाशन विभाग.
- [3] सैयद, जे.एम. पैगाम-लतीफ. [Shah Abdul Latif Studies Series]. सिंध सांस्कृतिक केंद्र.
- [4] पुनशी, डॉ. एस.के. A Biography of Saint Kanwarram. [संत कँवरराम का जीवन चरित्र]. डॉ. एस.के. पुनशी.
- [5] परियानी, लेखराज एवं तुलसियानी, लेखराज (संपा.). शिरोमणि संत कँवरराम.
- [6] रुचंदाणी, लीलाराम. सिंधी भगत. सिंधी साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश.
- [7] परियानी, बाई बनाराम. श्री संत कँवर विलास. भाई बनाराम वालधभाई असुदोमल परियानी.
- [8] लालवानी, डॉ. जेठो. सिंधी साहित्य शोध आलेख. 2021.
- [9] लालवानी, डॉ. जेठो. सिंधी भगत शैली. 1998.
- [10] लालवानी, डॉ. जेठो. सिंधी भगत परंपरा. 2019.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.